राजस्थान के भूले बिसरे स्वतन्त्रता सेनानी

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर (राज.)

भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता का इतिहास उन स्वतन्त्रता सेनानियों की शाश्वत स्मृति का इतिहास है, जिन्होंने प्राणपण से अपने जीवन की परवाह न करते हुए राष्ट्रभक्ति के उत्कृष्ट आदर्श का प्रस्तुतीकरण किया। अनेक स्वतन्त्रता सेनानी नींव की ईंट के रूप में शहीद हो गये, जिनकी पूर्णतया जानकारी भी शेष नहीं बची है।

राजस्थान में स्वतन्त्रता आन्दोलन के सत्प्रयासों का प्रारम्भ 28 मई 1857 से माना जाता है। आन्दोलन के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी बीकानेर निवासी अमरचन्द बांठिया थे, जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण संचित अपार धनराशि रानी लक्ष्मीबाई एवं ताँतिया टोपेको स्वतन्त्रता संग्राम हेतु दान कर दी थी। आपको 1857 के समर में ही अंग्रेज सरकार द्वारा फॉसी पर लटका दिया गया था।

1857 की क्रान्ति के क्रान्तिकारियों में उल्लेखनीय हैं, टोंक के मीर आलम खाँ सूबेदार शीतल प्रसाद तिलकराम, आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह, कोटा के जयदयाल, मेहराब खान, गुलमुहम्मद, अम्बर खाँ मुहम्मद खाँ धौलपुर के रामचन्द्र, हीरालाल इत्यादि। इनमें से कोटा के मेहराब खान एवं गुल मुहम्मद को 15 अक्टूबर 1857 को फॉसी दी गयी थी। राष्ट्र के लिए आत्मबलिदान करने वाले ऐसे सपूतों के प्रति हम सतत श्रद्धावनत हैं। राजस्थान में इस 1857 की क्रान्ति का अन्तिम चरण सीकर में रहा।

किसान आन्दोलनों का प्रारम्भ बिजोलिया से 1897 में प्रारम्भ हुआ। 1941 तक राजस्थान में विविध स्थानों पर किसान आन्दोलनों के माध्यम से क्रान्तिकारी गतिविधियां सक्रिय रहीं। 1913 से साधु सीताराम ने किसानों को संघटित करने एवं संघटन खड़े करने के अतुलनीय प्रयास किये। 14 मई 1925 को नीमूचाणा हत्याकाण्ड ऐसी बर्बर घटना थी, जिसे स्वयं गांधी जी ने जलियाँ वाला बाग की घटना से भी अधिक नृशंस एवं वीभत्स बताया था। उन्होंने इसे डायरिज्म डबल डिस्ट्रिल्ड शब्द से व्यक्त किया था। इसमें लगभग 1500 क्रान्तिकारी गोलियों से भून दिये गये थे।

1920 में महात्मा गाँधी द्वारा सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया जा चुका था। राजस्थान के शेखावाटी में गाँधी जी के आगमन से इस आन्दोलन का सूत्रपात झुन्झुनूं वाटी से हुआ। यहाँ के क्रान्तिकारियों में पं.ताडकेश्वर शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। आपने अजमेर तथा ग्राम नामक हस्तलिखित समाचार पत्र के माध्यम से क्रान्तिकारियों को सूचनायें प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। शेखावाटी में 1934 में बोसाणा काण्ड की घटना अत्यन्त निन्दनीय थी। इस काण्ड में पुरुषों पर ही नहीं स्त्रियों पर भी पाशविक अत्याचार किये गये। अंजना देवी चौधरी ने 1939 में सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व किया था। सुमित्रा खेतान एवं दुर्गावती देवी शर्मा शेखावाटी की उल्लेखनीय क्रान्तिकारी महिलाएं थीं, जिन्होंने पृथक से महिला सत्याग्राहियों के संघटन खड़े किये थे। दुर्गावती देवी शर्मा जयपुर में 18 मार्च 1939 को गिरफ्तार की गयी थी, तथा उन्हें चार माह तक जयपुर केन्द्रिय कारागार में रखा गया था।

शेखावाटी की महिला क्रान्तिकारियों में रमादेवी जो बिजौलिया किसान आन्दोलन में सक्रिय रहीं तथा 1930 में अजमेर में गिरफ्तारी के बाद केन्द्रीय कारागार में छः माह तक रहीं। 1939 में भी जयपुर में गिरफ्तार की गयीं तथा 4 माह तक जयपुर केन्द्रीय कारागार में रही। 1929 से लेकर 1947 तक आपने सक्रिय क्रान्तिकारी के रूप में भूमिका निभायी।

1931 से राजस्थान में प्रजामण्डलों की स्थापना का कार्य भी स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक अत्यन्त उल्लेखनीय पहलू है, जिसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। सर्वप्रथम 1931 में जयपुर एवं बूंदी में तत्पश्चात् 1934 में जोधपुर एवं कोटा में, 1936 में बीकानेर में, 1938 में मेवाड़ तथा अलवर में, 1939 में सिरोही एवं करौली में तथा 1944 में डूंगरपुर में प्रजामण्डल बने थे। इनके संस्थापक संचालक एवं अध्यक्ष क्रान्तिकारी ही थे।

जयपुर के समीप बिलौंची ग्रामवासी पं.बद्रीनारायणदोतोलिया का भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में पर्याप्त योगदान रहा। आप 17 नवम्बर 1928 को लाहौर में लाला लाजपतराय के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण पुलिस द्वारा किये गये लाठीचार्ज में घायल हुए थे तथा लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गयी थी। पण्डित जी भारत के स्वतन्त्र होने के बाद 17 अगस्त 1947 को लाहौर से वापस जयपुर लौटे थे। 14 अगस्त को पाकिस्तान की घोषणा के बाद हुए भीषण कत्लेआम में भी आपने अनेक भारतीयों की रक्षा की थी।

1930 में सवाईमाधोपुर में स्वदेशी आन्दोलन के सूत्रधार पण्डित भालचन्द्र शर्मा के योगदान का उल्लेख करना भी यहां प्रासंगिक होगा। आपने कलकत्ता में 1920 में बड़ी संख्या में छात्रों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह हेतु संघटित किया था तथा उसमें आपको गिरफ्तार भी किया गया था। 1939 में एक मास तक आप मोहनपुरा कारागार में रहे। कारावास से मुक्त होने पर न्यायाधीश ने पुनः चार मास के कारावास से दण्डित किया था।

1939 में सीकर के क्रान्तिकारी वेंकटेश पारीक चिरस्मरणीय हैं जिन्होंने कूदन, गोठडा मोल्यासी एवं बठोठ के जन आन्दोलनों का नेतृत्व किया था तथा स्वदेशी आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी थी। बाँसवाडा के सत्याग्रहियों में पण्डित दुर्गादत्त त्रिपाठी ने 1920 से स्वतन्त्रता संग्राम के कार्य को अपने हाथ में लिया।

आप क्रान्तिकारियों को गुप्त रूप से शस्त्र भी उपलब्ध कराते थे। आपने रणभेरी नामक पत्रिका का प्रकाशन एवं संपादन भी किया था।

सर्वोदयी नेता हरिभाउ उपाध्याय भी उल्लेखनीय नेतृत्व के धनी थे। आपने नमक आन्दोलन के समय ब्यावर में सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया था ब्रिटिश सरकार ने दो वर्ष के कारावास से आपको दण्डित किया था। बीकानेर में वैद्य मघाराम पर 1931 में बीकानेर षडयन्त्र केस के माध्यम से आप पर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज किया गया था। दूधवा खारा में आपको गिरफ्तार कर लिया गया, आप भी तीन माह कारावास में रहे।

1942 में भारत छोडो आंदोलन की पृष्ठभूमि में कोटा के पण्डित नयनूराम शर्मा 1920 से ही सक्रिय क्रान्तिकारी रहे। 1923 में डाबी में जनसभा में झण्डागान करने पर पुलिस की गोली से नानक भील का बलिदान हुआ था तथा आपको कोटा राज्य से निष्कासित कर दिया गया था। बाद में बून्दी जिले के निवाणा ग्राम में आपको गिरफ्तार किया गया। हाडौती के उल्लेखनीय क्रान्तिकारी रहे- पण्डित अभिन्न हरि एवं मास्टर बजरंगलाल। मास्टर बजरंगलाल ने नागपुर में बाबा अर्जुन के साथ भारत छोडो आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया था। बाबा अर्जुन पुलिस की गोली से मारे गये थे। जयपुर के निकटवर्ती ग्राम खोरा बीसल की निवासी रामप्यारी देवी शर्मा भी 1942 के भारत छोडो आन्दोलन की सक्रिय कार्यकर्ता रही।

लोहागढ़ के क्रान्तिकारी सपूत रमेश स्वामी थे। 1938 में आपने लाहौर में रह कर सिन्ध प्रान्त में जनजागरण का कार्य किया। भारत में सत्याग्रह-आन्दोलन के आप सूत्रधार रहे। 1942 के आन्दोलन में भुसावर में आप गिरफ्तार किये गये। 05 फरवरी 1947 को ब्रिटिश शासन के कुचक्र में आप पुलिस के वाहन से मारे गये। जोधपुर के बालमुकुन्द बिस्सा भी 09 जून 1942 को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किये गये थे तथा जेल में ही 19 जून को आपका निधन हो गया था। ऐसे अनेकानेक क्रान्तिकारी रहे, जिन्होंने राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति दे दी। आज आजादी के इस पावन पर्व पर हम उन सभी ज्ञातअज्ञात क्रान्तिकारियों को हृदय से श्रद्धाञ्जिल अर्पित करते हैं।